United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

साहित्य और मानव मूल्य: मानवता का रक्षक और दर्पण

डॉ. एन. बी. एन. वी. गणपति राव
पी.आर. गवर्नमेंट स्वायत्त कॉलेज,काकीनाडा। (आदिकवि नन्नय विश्वविद्यालय संबद्ध)

प्रस्तावना

महाराज भर्तृहरि ने 'नीतिशतकम्' में सत्य ही कहा है— "साहित्य संगीत कला विहीनः, साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।" अर्थात् साहित्य और कला के बिना मनुष्य बिना पूँछ और सींग के पशु के समान है। साहित्य केवल शब्दों का मेल नहीं, बल्कि समाज का हृदय है। यह केवल कागजों पर उकेरे गए शब्द नहीं हैं, बल्कि मनुष्य की संवेदनाओं, संघर्षों और उसकी आत्मा की अभिव्यक्ति हैं। 'साहित्य' शब्द की व्युत्पत्ति ही 'सहित' से हुई है, जिसका अर्थ है— सबका हित। अतः साहित्य का मूल उद्देश्य ही मानव मूल्यों की स्थापना और रक्षा करना है। मानव मूल्य वे नैतिक सिद्धांत हैं जो व्यक्ति के व्यवहार, सोच और निर्णय को नियंत्रित करते हैं। ये मूल्य समाज को एकजुट रखते हैं और व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं। साहित्य का हित चिन्तन विश्वकल्याण की भावना से अभिप्रेरित है। इसीलिए कहा गया है:

"अंधकार है वहाँ-जहाँ आदित्य नहीं।
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं।।"

रामायण महाभारत और गीता में मानव मूल्य

भारतीय महाकाव्यों में "रामायण" तथा "महाभारत" मूल्य की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। रामायण को "जीवन का आदर्श" तथा महाभारत को "जीवन का यथार्थ" माना गया है। ये ग्रंथ वस्तुतः जीवन के दो विशेष पक्षों का उद्घाटन करते हुए मूल्य चिंतन की विस्तृत सामग्री उपलब्ध करते हैं। रामायण में आदिकवि वाल्मीकि के मुख से निकली प्रथम पंक्ति ही प्राणीमात्र के प्रति उनके मन में उपजी अतिशय करुणा, प्रेमभावना और संवेदना को अभिव्यक्त करती है। उद्धरण द्रष्ट्व्य है :- ' मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीःकाममोहितम्॥'

. "महाभारत में मानवीय मूल्य के संदर्भ में अक्रोध, सत्य, क्षमा, पवित्रता, मैत्री, सहजता, तथा योग्य व्यक्तियों के भरण-पोषण का आदर्श प्रस्तुत किया है । प्रेम पूर्ण व्यवहार को व्यक्ति की उच्चतर प्रवृत्ति के रूप में ग्रहण करने का आग्रह है। अहिंसा एवं समस्त प्राणियों के प्रति मैत्री भाव को स्पष्ट अभिव्यक्ति मिली है । सबके प्रति दया एवं रक्षा की भावना" निम्नलिखित उद्धरण मेंप्रस्तुतहै:

""न हि प्राणात् प्रियतरं लोके किंचन विद्यते।

तस्माद्दयां नरः कुर्यात् यथात्मनि तथा परे॥ "

मानवीय मूल्य के अंतर्गत कर्तव्यबोध की भावना प्रमुख है। गीता में कर्तव्यबोध और फलासक्ति के विवेचन में मूल्य की स्थापना हुई है ।

गीता में "निष्काम कर्मयोग" के सिद्धांत की प्रतिष्ठा की गयी है जो उच्चतर मानवीय मूल्यों का मूल सिद्धांत है उदात्त मूल्यों का सृजन निष्काम भाव से ही होता है। इस संदर्भ में एक उद्धरण द्रष्टव्य है :-

" कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
. मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥
. योगस्थः कुरू कर्माणि संग व्यक्त्वा धनंजय ।
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उचयते ।

गीता में आत्मसाक्षात्कार को बहुत अधिक महत्व दिया गया है।' आत्मा' की खोज में मानव की मुक्ति का संदेश है ।
भारतीय मनीषियों ने मानव जीवन को आध्यात्मिक दृष्टि से देखा, तथा मानव के विकास के लिये मानवीय मूल्यों के संदर्भ में पुरुषार्थों की कल्पना की है ।

मानवीय मूल्य और साहित्य का परस्पर-सम्बन्ध

साहित्य, समाज और मानव जीवन की एक सहज अभिव्यक्ति है। साहित्य अपने समय के समाज की आकांक्षाओं का प्रतिबिम्ब माना जाता है। साहित्यकार समाज का द्रष्टा होता है। वह साहित्य सृजन के क्षणों में जीवन एवं जगत की अनेक समस्याओं, सामाजिक एवं वैयक्तिक अवधारणाओं पर चिन्तन करता है। तत्पश्चात् अपने अनुभूत सत्यों को शब्दों में पिरोकर साहित्य की विविध विधाओं में प्रस्तुत करता है।

साहित्यकार अपनी अभिव्यक्ति में कभी समाज के अतिनग्न यथार्थ को प्रस्तुत कर मानव को समाज की नग्नता से उबारने का प्रयास करता है और कभी पतनोन्मुख मानवता को एक नया उत्कर्ष प्रदान करने के लिए उसके समक्ष अतीत की स्वर्णिम झाँकी प्रस्तुत करता है। साहित्यकार न केवल वर्तमान, वरन् भविष्य को भी सँवारने का प्रयास करता है। ऐसी स्थिति में कवि की अन्तर्दृष्टि जीवनोपयोगी सिद्धान्तों एवं विचारों की ओर अवश्य जाती है। जीवनोपयोगी सिद्धान्त एवं विचार ही सामाजिक मान्यता प्राप्त कर "मूल्य" बन जाते हैं। इस प्रकार के मानवीय मूल्य साहित्य के महत्त्वपूर्ण अंग बन जाते हैं।

मानवीय मूल्यों के सम्बन्ध में साहित्यकारों की भूमिका का निर्धारण करते हुए डॉ० नामवर सिंह का कथन है कि साहित्यकार हमेशा (मूल्य तो अमूर्त होते हैं, पर) मूल्यों के मूर्तरूप की खोज करता है, इसीलिए साहित्यकार जीवित प्रतीकों, बिम्बों, चरित्रों, यहाँ तक कि जीवित मिथकों की सहायता से आगे बढ़ता है। इसलिए उन्हें अन्त में मंच पर खड़े होकर भाषण नहीं

देना पड़ता है। वे स्वयं ही स्थापित हो जाते हैं।' उनका कहना है कि वह साहित्य घटिया है, जो केवल अपने जमाने के क्रोध, उच्छ्वास को मात्र व्यक्त करता है। मूल्यवान् साहित्य वही है, जो ऐसी किसी सामाजिक शक्ति के माध्यम से मूल्य की प्रतिष्ठा करता है।

1. साहित्य और संवेदना का गहरा संबंध

साहित्य मनुष्य को केवल शिक्षित नहीं करता, बल्कि उसे 'संवेदनशील' बनाता है। हिंदी साहित्य में मानवीय मूल्यों जैसे प्रेम, करुणा, समानता और नैतिकता को कवियों ने मुखर अभिव्यक्ति दी है। कबीर ने भेदभाव रहित मानवता पर बल देते हुए प्रेम को सर्वोच्च माना:

"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।"

तुलसीदास जी ने परोपकार को परम धर्म मानते हुए कहा:

"परहित सरिस धरम नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई॥"

सूरदास की भक्ति में मानवीय संवेदना प्रमुख है, जहाँ कान्हा की बाल-लीलाएँ लोक को निश्छल प्रेम से जोड़ती हैं। मैथिलीशरण गुप्त जी ने मनुष्यता की परिभाषा देते हुए लिखा—

"वही मनुष्य है कि
जो मनुष्य के लिए मरे।"

मुंशी प्रेमचंद की 'कफ़न' या 'गोदान' और निराला की कविताएँ पढ़ते हुए हम समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की पीड़ा को महसूस करते हैं। यह 'पर-दुख-कातरता' ही साहित्य का सबसे बड़ा मूल्य है।

"साहित्य जहाँ शब्द देता है,
वहीं मानव मूल्य जीवन को अर्थ देते हैं।"

2 नैतिकता और आ.दर्शों की स्थापना

साहित्य सत्य, अहिंसा, ईमानदारी और प्रेम जैसे शाश्वत मूल्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी पहुँचाता है। वेदों, उपनिषदों, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों में मानवता और नैतिकता के सशक्त संदेश निहित हैं। कबीर और तुलसी ने कुरीतियों पर प्रहार कर सत्य और समानता को स्थापित किया। महाराज भर्तृहरि के अनुसार वाणी ही वास्तविक आभूषण है:

"केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला।
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः।।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते।
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।"

अर्थात् बाजूबंद, हार या सुगंधित लेप मनुष्य की शोभा नहीं बढ़ाते; केवल सुसंस्कृत वाणी ही उसे अलंकृत करती है। सच ही है कि जब साहित्य में नैतिकता आती है, तभी धरा स्वर्ग बनती है।

3. साहित्य समाज का दर्पण और मशाल

साहित्य समाज की बुराइयों को दिखाने वाला 'दर्पण' भी है और उन्हें दूर करने का मार्ग दिखाने वाली 'मशाल' भी। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में कवियों की ओजस्वी वाणी ने सुप्त राष्ट्र को जगाकर सिद्ध कर दिया कि साहित्य मानव मूल्यों और राष्ट्रीय चेतना का संरक्षक है।

"साहित्य जहाँ शब्द देता है,
वहीं मानव मूल्य जीवन को अर्थ देते हैं।"

4. आधुनिक मशीनी युग में साहित्य की भूमिका

आज जब समाज भौतिकता और स्वार्थ की ओर झुक रहा है, तब साहित्य की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। बाल साहित्य में भी मानव मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। जैसे चाचा चौधरी और नंदन जैसी पत्रिकाओं में बच्चों को नैतिक शिक्षा देने वाले कहानियाँ और चित्रकथाएँ प्रकाशित की जाती हैं। यह साहित्य बच्चों के मन में अच्छे आचार-व्यवहार और समाज के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करता है। युवा पीढ़ी को साहित्य के माध्यम से संवेदना, सह-अस्तित्व और मानवता के प्रति जागरूक किया जा सकता है। सोशल मीडिया के युग में साहित्य आंतरिक शांति और आत्ममंथन का स्रोत बन सकता है।

आज के डिजिटल और मशीनी युग में हमारे बीच से धैर्य, संवाद और आपसी संवेदनाएँ क्षीण होती जा रही हैं। ऐसे 'मैकेनिकल' समय में साहित्य ही वह तत्व है जो हमारे भीतर की कोमलता को जीवित रखता है। यह हमें याद दिलाता है कि हम केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि एक सामाजिक प्राणी हैं जिनका धर्म प्रेम और भाईचारा है।

निष्कर्ष

साहित्य और मानव मूल्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। बिना मूल्यों के साहित्य केवल 'मनोरंजन' मात्र है, और बिना साहित्य के मानव मूल्य केवल सैद्धांतिक बातें। एक सभ्य और संवेदनशील समाज के निर्माण के लिए नई पीढ़ी को साहित्य से जोड़ना अनिवार्य है। साहित्य वह शक्ति है जो मनुष्य के भीतर के 'पशु' को मारकर उसे 'देवत्व' की ओर ले जाती है और समाज के भीतर मर रही 'मनुष्यता' को पुनर्जीवित करती है।

"साहित्य बचाओ—मनुष्यता बचाओ।"

संदर्भ ग्रंथ सूची

मानव मूल्य और साहित्य - धर्मवीर भारती
चिंतामणि (भाग 1 और 2) - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
साहित्य का समाजशास्त्र - डॉ. नगेंद्र
नया साहित्य नए प्रश्न - नंद दुलारे बाजपेई
हिंदी साहित्य विशेष शताब्दी - नंद दुलारे बाजपेई